राज एक्सप्रेस, भोपाल 14 JAN 2011

[अच्छी खबर]

अनूपपुर में मैकल पहाड़ तक पहुंची रोशनी

सौर लालटेन से जगमग हुए घर

शहडोल (आरएनएन)। संभाग में अनूपपुर जिले के दुर्गम पहाड़ियों में बसे मैकल पहाड़ गांव में बिजली न होने का बैगा आदिवासियों को कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि यहां के सभी घर अब सौर ऊर्जा से लगभग हैं। इसके साथ ही यह गांव अनूपपुर जिले का पहला सौर ऊर्जा ग्राम बन गया। करीब डेढ़ सौ की आबादी वाले मैकल पहाड़ गांव मे बैगा आदिवासियों के 38 परिवार रहते हैं। अन्य कई गांवों की तरह इस गांव के लोग भी रोशनी के लिए चिमनी पर निर्भर थे। पिछले चार माह पूर्व हुई एक ग्राम सभा में म.प्र. ग्रामीण आजीविका परियोजना ने गांववालों से उनके घरों में रोशनी के लिए सौर लालटेन उपलब्ध कराने की पेशकश की। इसके लिए आदिवासी फौरन राजी हो गए। पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने और प्रदूषण रोकने के लिए दिल्ली की टेरी संस्था की मदद से आदिवासी परिवारों को सौर लालटेन उपलब्ध कराई गई है। इस संस्था ने 1 लाख 20 हजार रूपए का अनुदान भी दिया। यानी एक सौर लालटेन पर 250 रूपए का अनुदान और 250 रूपए का ऋण दिया गया। ऋण तीन किस्तों में जमा करना है। लालटेन चार्ज करने के लिए गांव में एक सौर ऊर्जा सिस्टम भी लगाया गया है।

38 बैगा परिवार हुए लाभान्वित

15 रुपए खर्च पर माह भर रोशनी

सौर लालटेनें ग्रामीणों की पंसद बन गई है। एक तरफ इन सौर लालटेनों के इस्तेमाल से जहां प्रदूषण कम हो रहा है, वहीं आदिवासियों का पैसा और स्वास्थ्य भी बच रहा है। बस, लालटेन को चार्ज करने के लिए सिर्फ 15 रूपए प्रति माह गांव की गैर परम्परागत ऊर्जा विकास समिति को देना पड़ते हैं। इस समिति में गांव के ही लोग शामिल है। अब गांव के घरों में कहीं भी कैरोसिन चिमनी या लालटेन नजर नहीं आती। रोशनी के लिए शादी ब्याह तथा पारिवारिक उत्सवों तक में ग्रामीण अब सौर लालटेन का इस्तेमाल कर रहे है। सौर ऊर्जा के इस गांव में कदम रखने से गांव वाले बेहद खुश हैं, क्योंकि दुर्गम पहाड़ियों के बीच बसे उनके गांव में चिमनी युग खत्म हो गया।

इसके बाद गांव में जैसे दीवाली मन गई। गांव आदिवासियों ने सौर ऊर्जा का स्वागत कुछ नाटकीय ढंग से किया। सौर ऊर्जा आने पर नृत्य किया गया और लालटेन की आरती उतारी गई। मैकल पहाड़ में सौर ऊर्जा के आने के बाद गांव के बच्चे यह सोच कर खुश है।